भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-2, अंक-2-3	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-15.00
रविवार, 12 फर' 78	मानद सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.25

कृपावतार स्वामिश्री सहजानंदजी

अभयं सत्त्वशुद्धिः

एक समय की बात है-मुक्तानंदस्वामी और ब्रह्मानंदस्वामी किसी गांव की ओर जा रहे थे। तब एक द्वेषी बैरागी ने इनको देख लिया और मार्ग में ही पकड़ कर एक एकान्त स्थान में ले जा कर खंभे के साथ कस कर बांध दिया। इसके बाद इन दोनों साधुओं के नाक एवं कान काटने के लिए छुरी लेकर उसको घिसने के लिए बैठ गया। ब्रह्मानंदस्वामी यह देख कर सहज व्याकुल हो उठे। उनके मन में था कि लोग हमारे नाक और कान कटे हुए देखेंगे तब सोचेंगे कि निश्चित हमने कोई बुरा कार्य किया होगा। तब सर्व संशयमुक्त मुक्तानंदस्वामी ने कहा–'स्वामी, व्याकुल मत होना। अगले अनेक जन्मों में हमने अपनी औरत और बच्चों के लिए नाक कान कटवाये होंगे। इस जन्म में यदि महाराज के लिए कटवाने पड़े तो अच्छा ही है। हम तो महाराज के आश्रित हैं, वे हमारी अवश्य रक्षा करेंगे और बाद में दोनों भजन गाने लगे।' इस भजन की आवाज रास्ते से गुजरते हुए राघव जाट ने सुनी अतः वह वहां पहुंचा। पहुंचते ही सब परिस्थिति जान ली। पाखण्डी साधु को खूब उपालभ्य दिया और सन्तों को छुड़वा कर सुरक्षित रूप से बाहर पहुंचा दिया।

ऐसी ही एक और प्रसंग है। सद्. मुक्तानंदस्वामी की साधुता से किसी को ईर्ष्या द्वेष हुआ। अतः उसने भयंकर विष चंदन में मिश्रित कर के पूजा के बहाने उसका लेप मुक्तानंदस्वामी के सारे शरीर पर कर दिया। महाराज की कृपा से मुक्तानंदस्वामी को तो कुछ नहीं हुआ, किन्तु लेप करनेवाले के हाथ की खाल उतर गई !

इस प्रकार एक बार द्वेषी वैरागिओं ने ब्रह्मानंदस्वामी को छड़ी से इतना मारा की मारते मारते छड़ी ही टूट गई। किसी ने आकर स्वामी को छुड़वाया और कहां-कहां कष्ट हुआ है यह पूछने लगे, तब स्वामी ने कहा-मेरी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, मुझे तो इतना ही दुःख है कि मेरे गुरुभाई की छड़ी टूट गई।

उस समय के कुछ-कुछ शुष्क वेदान्ती भी इन

साधुओं को परेशान करने में पीछे नहीं थे। एक बार मुक्तानंदस्वामी और डेढ़ सौ साधु गुजरात में पर्यटन करते हुए अहमदाबाद आये। उनका निवास था दरियाखान के घुम्मट में। प्रतिदिन जब वे शहर में भिक्षा मांगने के लिए जाते थे उस समय रास्ते में उनकी भिक्षा की झोली में वे लोग मरे हुए चूहे, छिपकली, प्याज, लहसन और धूल एवं कूड़ा डाल देते थे। सामान्य धूल कूड़े मिश्रित भिक्षा को तो साधु लोग पानी में धोकर करके भक्षण कर लेते थे। इस प्रकार शुद्ध करने के बाद सब के लिए यह भिक्षा आध पाव या छटांक ही रह जाती थी और कभी-कभी जब भिक्षा अभक्ष्य हो जाती थी तब वे खा भी नहीं पाते थे। एक समय साधुओं की भिक्षा में कुछ बासी और बिगड़ा हुआ अन्न आ गया। परिणाम-स्वरूप साधुओं के पांव में दरारे पड़ गई और पांव के तले में फोड़े निकल आये। यहां अहमदाबाद में साधुओं की यह स्थिति, वहां कच्छ-भुज में स्थित महाराज के पांव में भी फोड़े निकल आये। ऐसी थी महाराज की अपने शिष्यों के साथ तादात्म्यता !

साधुओं की कड़ी परीक्षाः

एक बार महाराज ने डेढ़ सौ साधुओं की मंडली जामनगर भेजी थी। वे नगर के बाहर ठहरे थे और लोगों से भिक्षा मांग कर निर्वाह चलाते थे। भिक्षा में जुवार, बाजरा, मक्का आदि मिलते थे। साधुजन इन सब को मिश्रित कर के गोली बना कर खा लेते थे और यह भी पर्याप्त नहीं था। कभी-कभी छटांक तो कभी-कभी एक ग्रास जितना ही सब को मिलता था। साधुओं ने अपने भोजन सम्बन्धी कष्ट महाराज को कहलवाया।

थोड़े दिन के बाद एक संदेशवाहक हरिभक्त के साथ महाराज ने निम्नलिखित प्रत्युत्तर भेजा–

पुरानी बात है, एक गांव में एक सद्गुरु रहते थे। गांव का एक सज्जन प्रतिदिन उन को दो पाव भर चावल दे जाता था। इस पर सद्गुरु का व्यवहार चलता था। इतने में एक मुमुक्षु सद्गुरु का शिष्य बनने के लिये आया। सद्गुरु ने कहा–'सो तो ठीक है, किन्तु यहां भिक्षा का कष्ट है। देखो, इतना चावल मिलता है, उस पर मेरा गुजारा भी कष्ट से हो रहा है।' तब मुमुक्षु ने कहा–'महाराज, चिन्ता की बात नहीं है। चावल पकने के बाद जो पानी रह जाय वह आप मुझे दे देना। मेरा गुजारा उस पर हो जायेगा।' कुछ समय के बाद दूसरा मुमुक्षु आया और शिष्य बनने की इच्छा प्रदर्शित की। तब गुरु ने बतलाया की खुद का और एक शिष्य का गुजारा किस प्रकार हो रहा है। तब उसने कहा–'महाराज, चिन्ता मत कीजिए, चावल पकाने के पूर्व उसको पानी में साफ तो करते होंगे, यह पानी ही मेरे लिये पर्याप्त है।' इस प्रकार वह भी गुरु की सेवा में रह गया। कुछ समय बीतने के बाद एक तीसरा मुमुक्षु आया। इन्होंने भी शिष्य बनकर गुरु की सेवा में रहने की इच्छा दिखाई। तब गुरु ने कहा कि परिस्थिति ऐसी है। तब इन्होंने कहा–'गुरुदेव, आप भोजन के पश्चात् हाथ तो धोते होंगे, बस वह पानी और शेष बिखरे हुए एकाद दो अन्नकण मेरे लिए पर्याप्त होंगे। आप मेरी चिन्ता मत कीजिए। मुझे तो सत्संग चाहिए।' इस प्रकार इन तीनों मुमुक्षुओं ने जो कष्ट उठाया उनकी तुलना में तुम्हारा कष्ट तो कुछ है ही नहीं। अतः मानो तो दुःख है, नहीं तो भगवान की भक्ति की मौज है।

महाराज का यह पत्र पढ़ कर सब साधु अपने कष्ट को भूल गये, प्रसन्नता छा गई और सद्वर्तन का बल मिल गया। तैलंग देश से आ कर एक व्यक्ति साधु बना था, वह तो नदी के तट पर सब्जीवाले सब्जी साफ करने के बाद जो बेकार

मूली के पत्ते छोड़ जाते थे उनके द्वारा उदरपूर्ति करने लगा। कुछ तो हरी काई खा कर जीवन निर्वाह करने लगे। इस प्रकार चार पांच दिन बीत गये।

पांचवें दिन जामनगर का राजा अचानक वहां से गुजरा। उन्होंने साधुओं के क्षीण शरीर देखे और हरी काई खाते हुए भी देखा। राजा का मन दया से भर गया। उन्होंने अपने सेवक द्वारा जान लिया कि ये तो स्वामिनारायण के साधु हैं। अतः राजा के दिल में अधिक सम्मान की भावना उभर आई। इन्होंने अपने सेवक के साथ साधुओं को कहलवाया कि आप सब हमारे महल में आकर रहिए। आप की आहार की व्यवस्था भी महल में ही हो जाएगी और आप निश्चिन्तरूप से महल में रहकर भजन कीजिए। इसके प्रत्युत्तर के रूप में साधु मंडली के प्रमुख ने कहा–'जहां कोई हमारा सम्मान करें वहां हम नहीं जा सकते हैं, वहां रह भी नहीं सकते हैं। ऐशोआराम साधुओं के लिये ठीक नहीं है। अतः हम आपके निमंत्रण को स्वीकार नहीं कर सकते हैं।' तब राजा के सेवक ने कहा–'यह आप लोग ठीक नहीं कर रहे हो। इस में राजाजी अपने आपको अपमानित मानेंगे।' तब साधु मंडली के प्रमुख ने कहा कि 'हमारा उद्देश्य महाराजा का अपमान करने का नहीं है। हमारी मजबूरी है कि हम हमारे भगवान स्वामिनारायण की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकते हैं। तथापि राजाजी को हमारा यह निश्चय अवज्ञा रूप लगे तो हम इस स्थान को छोड़े देंगे, भगवान की आज्ञा को नहीं। हम साधु हैं, महल में नहीं आ सकते।'

यह सुनकर राजा का सेवक भी आश्चर्यचकित हो गया। उसने राजा को सारी बात शांति से समझाई। राजा दैवी जीव था, अतः उनको साधुओं के प्रति अधिक सम्मान की भावना जागृत हुई और उसने भिन्न-भिन्न दुकानों और घरों में अपनी ओर से अच्छी खाद्य सामग्री रखवाई और इस प्रकार साधुओं को उत्तम भिक्षा दिलवाई। लगातार दो दिन जब ऐसा हुआ तब साधु मंडली के प्रमुख ने जान लिया कि यह राजा की युक्ति है। अतः इन्होंने साधुओं को बुलाकर कहा कि जहां नित्य उत्तम खाद्य पदार्थ मिलते हैं वहां साधुओं को नहीं रहना चाहिए। अतः यहां से चले जाना चाहिए। तीसरे ही दिन साधु मंडली बिना पूर्वसूचना जामनगर से निकल पड़ी।

पांच सौ परमहंस

सहजानंदस्वामी ने इस प्रकार एक महनीय साधुता की परंपरा चलाई। इनके त्यागी, वैराग्यशील और तपस्वी साधुओं ने संसार में दिव्य वातावरण का संचार किया। किन्तु स्वार्थी और इर्ष्यापूर्ण मानसवाले अन्य पन्थी साधुओं द्वारा परेशानी नित्य चलती रही। इस समस्या को हल करना ही था। स्वामी सहजानंद एक ओर से असाधारण साधुता परायण थे तो दूसरी ओर से कुशल प्रशासक और नीतिज्ञ थे। इन्होंने अन्न क्षेत्रों को तत्काल बंद करवा दिया, ताकि द्वेषी वैरागिओं को बिना परिश्रम भोजन पा कर अन्न लूटने का और इसके अतिरिक्त पाशविक अत्याचार करने का मौका न मिल सके। दूसरा कार्य साधुओं की परेशानी हटाने का था। साधु गाली सहन कर लेते थे, अपमान, तिरस्कार और मार को भी सहन कर लेते थे; किन्तु जिस सम्प्रदाय में साधुओं के लिए स्त्री दर्शन वर्ज्य है वहां जानबूझ कर उनके पास स्त्रियां भेजी जाती थी और उनकी कंठी और पूजा की सामग्री भी लूट ली जाती थीं, जब कि साधुओं को प्रायश्चित के रूप में बार-बार व्रत रखना पड़ता था यह महाराज से सहन नहीं हुआ और उन्होंने इस आपत्ति से साधुओं को मुक्त

कराने के लिए असाधारण हल निकला। यह जितना सुंदर था इतना ही आश्चर्यकारक था। श्रीजी महाराज ने संप्रदाय के सर्व साधुओं को 'कालवानी' गांव में इकट्ठा किया और इन पांच सौ साधुओं को इन्होंने ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी-भीम एकादशी के दिन एक साथ परमहंस दीक्षा दे दी।..... अलफी पहनाई और गले से कंठी, कंधे से यज्ञोपवीत और शिर से शिखा उतरवा ली.... परमहंस के नये नियम दिये... प्रत्यक्ष मूर्ति की पूजा के अलावा मानसी पूजा की विधि बतलायी और.... अलक्ष्य रूप में विचरण करने की आज्ञा दी।

सहजानंदस्वामी का यह निर्णय एक क्रान्तिकारक निर्णय था, जिस में धर्म का पूरा बाह्य रूप आमूल परिवर्तित हो जाता था। जिससे उनमें एक महान धर्मप्रवर्तक का कौशल और दीर्घदृष्टि दृष्टिगोचर होती है। परमहंस की दीक्षा प्राप्त यह साधु अनेक प्रकार के भोजन, रहन-सहन आदि के विधि निषेधों से मुक्त हो गये। सर्व बाह्य चिह्न नष्ट होने के कारण, 'यह स्वामिनारायण संप्रदाय के साधु हैं'-इस परिचय के अभाव में आक्रमण का अब भय नहीं रहा। हां, श्रीजी महाराज ने इन साधुओं के बाह्य चिह्न ही हटा लिये थे, भीतर का त्याग और वैराग्य तो अधिक दृढ़ कर दिया। लोग अब इन साधुओं को 'स्वामिनारायण के मूंडिये' के रूप में पहचानने लगे।

उस जमाने की दृष्टि, आचार-विचार और रहन-सहन की दृढ़ मान्यताओं के परिपार्श्व में सोचे तो यह एक असाधारण परिवर्तन था। वर्णाश्रम के सांचे में ढले हुए और वर्षों से शिखासूत्र धारण करने वाले इन बड़े-बड़े संतों को अपना समग्र धार्मिक व्यवहार पलटना था और उन्होंने सहजानंदस्वामी-जिनकी आयु उस समय केवल तेईस साल की थी-उनमें असीम श्रद्धा के कारण बिना एक क्षण का विलम्ब किये उन की आज्ञा का पालन करके उत्कृष्ट क्रान्ति का अभिवादन किया। **एक ही रात्रि में यह चमत्कारिक परिवर्तन करना और एक साथ पांच सौ साधुओं को नवदीक्षा की जिम्मेदारी से अवगत कराना यह घटना सहजानंदस्वामी की कार्यदक्षता की अद्वितीय मिसाल है। विश्व के धार्मिक इतिहास में शायद ही ऐसा अद्वितीय और अनोखा उदाहरण मिलेगा।** साधुओं की दृष्टि से देखें तो यह उनकी उत्कृष्ट श्रद्धा और भक्ति वीरता का परिचायक प्रसंग है। सहजानंदस्वामी का कैसा दिव्य और प्रभावक व्यक्तित्व था यह भी इससे सिद्ध होता है।

श्रीजी महाराज के दिये हुए नये नियम अत्यधिक कड़े थे। उदाहरणार्थ-अब साधुओं के लिए–

- रात्रि के छतवाले घर में निवास निषिद्ध था।
- गांव के बाहर देवालय या जंगल या खेत में रहना था,
- किसी स्थान एक रात्रि से अधिक नहीं रहना था,
- स्त्री की साड़ी भी दृष्टिगोचर हो जाय तो व्रत करना था,
- पांव फैला कर सोने की मना थी,
- शीतकाल की ठंडी सुबह में ब्रह्ममुहूर्त में उठकर मटके के ठंडे जल से स्नान करना था,
- ध्यान के समय सांप और बिच्छु काट भी ले तो हिलना डुलना नहीं था,
- पांव में जूते नहीं पहनना था.... आदि।

इस प्रकार महाराज ने इन साधुओं को कठिन तपश्चर्या में जोत दिया और संतों ने भी इसे प्रेमपूर्वक स्वीकार लिया और.... साधुता को एक कठिन परीक्षा स्वीकार कर के वे उस में पार उतर गये।

– क्रमशः

❋ ❋ ❋

Spiritual Renaissance

From the holy books & scriptures and from the spiritual history for the last 20,000 yrs. we find the devotion worship and upasana in two different categories –

Sakar Upasana :

Worship, devotion and upasana of the manifested divinity or divinity manifested in human form like Rama, Krishna, Buddha, Mahavir and Swaminarayana or in the form of supremely realised Brahama Swaroop saints.

Nirakara Upasana :

Worship, devotion and knowledge or upasana of the unmanifested divinity or Avyakta sacchidananda Brahman.

But in any case, from the innumerable experiments and the empirical truths arrived at from these, mystical and spiritual experience it has been authentically now agree and proved that the eternal universal religion will be always effective, creative and practical if it's fundamental assumptions are based on yugal (dual) upasana just as Shiv-Shakti, Laxmi-Narayana, Nara-Narayana & Akshar-Purshottam, which is also confirmed and advocated by Lord Krishna in Gita-15th Adhyaya. The two divine entities Brahman and Parbrahman manifested on this earth in the divine personal form of Gunatitanand Swami and Sahajananda Swami just as Nara-Narayana, Laxmi-Narayana, Radha-Krishna for yugal upasana. The real seeker of truth or the true aspirant has to attain identification and equivalence with the eternal creative force, which is the infinite glory and power of God through whose grace and sankalpa this universe comes into existence and with his innumerable powers or shakti the creation, development and dissolution goes on infinitely. To be free from this cycle of birth and death and to be an emancipated soul one has to identify oneself with the Akshar or which the Mother consciousness as Shri Aurobindo also advocated in his 'Life Divine.' If one becomes Radha-Roopa then Krishna will totally manifest in such devotee and become Krishna-Swaroop or Brahma-Swaroopa. This is the easiest, simplest and shortest way of liberation and realisation. The eternal divine entities Brahamn and Parabrahman, manifested two hundred years before and the same spiritual hierarchy has been maintained by the infinite grace and compassion of Lord Swaminarayana.

Swami Shri Yajnapurushdasji Shastriji Maharaj was born in Gujarat at Mahelav, near Vartal. He went into samadhi at the age of three and had the vision of God. As he advanced in age, he used to attend congregations of bhaktas and tried to search for a true Sadhu. His determination brought him in front of Shri Pragji Bhakta, a foremost disciple of Shri Gunatitanand Swami and he lost his physical identity in the Brahmic Consciousness of Shri

Pargji Bhakta. Shri Pragji Bhakta saw the beaming luster of celibacy and devotion of this young Sadhu Yajnapurushadasji and prepared the instrument through whom Lord Swaminarayana was to manifest after him. Swami Yajnapurushdasji and his sadhus moved in villages of Gujarat and Saurashtra inspite of torrential rains, shivering cold & scoring heat, forebearing insults and injuries and ultimately winning the hearts of people. His life, conduct, character, action and every moment spoke volumes of a true religionist or a philosopher.

The fundamental assumption of all the religions, like yugal upasana was revitalized and re-established by him publicty and openly for the devotees of all faiths, so that the crude nature, the desires and the ego sense could be melted away and get transformed into the Brahmic Consciousness. Swami Shri Shastriji Maharaj built serval temples in Gujrat and Bombay for permanently stabilising this yugal upasana in the form of Akshar-Purushottam, Brahman-Parabrahman, Atman and Paramatman. It was because of this inherent truth, he became extremely popular in India and abroad and the whole divine movement of Gunatit Jnan was spread by Yogiji Maharaj and his band of saints like Pramukh Swami, Mahant Swami, Hariprasad Swami, Swayampraksh Swami, Purushottamcharan Swami, Akshavihari Swami and such other Sadhus. It is continuous process and will ever remain continuous by his grace and blessings.

To built temples with the expanse of crores of rupees or to have the mass following into millions or to initiate millions of people from other religions into one's fellowship or to show and do number of miracles are not the real greatness of the spiritual masters, Science & technology can also do these things. Physical power also can manifest such surprising items and things, but these things have nothing to do with real spiritualism. General mass is, therefore, enamoured by these power and misled in the name of true religion.

Swami Shastriji Maharaj revitalized the Ekantik Dharma – Sanatan Dharma with the establishment ofyugal upasana which was already lying dormant, as a forgotten chapter in the spiritual history, but specifically narrted and advocated by Lord Krishna in Gita and also in Upanishads. This was brought out upto date in the clear and marked out forms so that common mass can also understand the meaning and significance of this upasana known as Gunatit jnan. This is not pertaining to any sampradaya or any religion, but it is concerned mainly with our soul, with our spirit for realising our real being. Fundamentally the crude nature has to be transformed into the divine nature and the ego sense has to be transcended into the divine consciousness. This change should be permanent in this vary life and wherever it could be achieved or attained and

realized that is the true religion for mankind.

It these conditions are actually fulfilled by this upasana, then swami Shri Shastriji Maharaj is the eternal guide, philosopher, visionary and pathfinder for the mankind and the greatest contribution given to us by him is the re-vitalisation of this upasana or eternal religion known as sanatan dharma, directly concected with the soul and its liberation. This is open for all without any distinction of caste, creed, colour or sex. There have been various centers where Akshar-Purshottam knowledge is imparted and spiritual techniques have been already mastered by number of saints in this holy fellowship through whom one can have self and supreme realisation.

Vasant Panchami – the birthday of Swami Shastriji Maharaj thus becomes the unique and auspicious day for the mankind. With the remembrance of Shastriji Maharaj & Lord Swaminarayana, if one honestly and sincerely does any sankalpa for spiritual advancement it is authentically confirmed that it will be positively fulfilled within a short time. This sort of sankalpa may be done in the presence of Gunatit saint and have His blessings for fulfillment. This is new innovation known as spiritual renaissance done and established by Shastriji Maharaj, Akshar-Purushottam is the eternal principle of the divine system and its originators and profounder are Shastriji Maharaj & Yogiji Maharaj. We have simply to expand it with an open mind and with love and charity. Swami Shri Shastriji Maharaj and Yogiji Maharaj have relentlessly worked against all hatreds, insults, social conflicts and number of other resistances.

But, because of the inherent truth they have triumphed and won over even those who opposed them by that simplicity, humbles, love and compassion. As Yogiji Maharaj said in Ahmedabad this is going to become the universal religion. Let us all accept this holy eternal principle of Gunatit Jnan and become really happy, contented, joyfull, cheerful & leading the divine life and serve the fellowmen with the same love and charity.

Swami Shri Shastriji Maharaj will ever be remembered as long as this earth is in existence. It is the highest boon given to mankind and one has to accept it for supreme realization and understanding. May God bless us all for this short of divine vision and divine action.

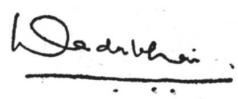

..... Remember that the nature of a saint is unfathomable. Judge him not. Measure not his divine nature with the inadequate yardstick of your ignorance. Criticise not saint's action which is done on universal vision.

..... Obedience to Guru is better than reverence.

-Swami Sivananda

संन्यासी का धर्म है कि उन्हें स्त्री का संपूर्ण त्याग करना चाहिए। उन्हें स्त्री की प्रतिमा या छवि भी नहीं देखनी चाहिए। उन्हें स्त्री के पास भी नहीं बैठना चाहिए। उन्हें स्त्री के साथ वार्तालाप भी नहीं करना चाहिए। स्त्री कितनी भी पवित्र हो, कितना भी प्रभुभक्त हो संन्यासी को स्त्री से दूर रहना चाहिए।

स्त्री स्पर्श के समान संन्यासी के लिए स्वर्ण का स्पर्श भी त्याज्य है। स्वर्ण द्रव्य मात्र का प्रतीक है। द्रव्य का परिग्रह साधु के लिए निषिद्ध है।

– श्री रामकृष्ण परमहंस

✶ ✶ ✶

..... Undue attachment to Ramdas' person instead of leading to his real and all-pervading existence creates intolerance and fanaticism.

..... If all who have come in contact with Ramdas do really love him they must love each other, if not, their love for him can not be true and sincere. Each one of them must put themselves to the test. Ramdas fully believes that the difference amongst you there, however superficial they may be, will disappear and perfect harmony and goodwill will prevail.

– Swami Ramdas

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	16.2.78	गुरुवार	नवमी, श्री स्वामिनारायण जयंती
2.	दि.	18.2.78	रविवार	जया एकादशी, उपवास
3.	दि.	5.3.78	रविवार	विजया एकादशी, उपवास
4.	दि.	7.3.78	मंगलवार	महाशिवरात्रि
5.	दि.	18.3.78	शनिवार	नवमी, श्रीस्वामिनारायण जयंती
6.	दि.	20.3.78	सोमवार	एकादशी, उपवास
7.	दि.	24.3.78	शुक्रवार	हुताशनी, अ.म.मु. भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन
8.	दि.	3.4.78	सोमवार	पापमोचनी एकादशी, उपवास

साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदास जी द्वारा योगी डिवाईन सोसाईटी,
ए-103, अशोक विहार-III, दिल्ली-110052 फोनः 518838
मुद्रण स्थानः ठक्कर प्रिंटिंग प्रेस, 2588, बस्ती पंजाबियान, सब्जी मण्डी, दिल्ली-110077